

गे ०१ पनपृतंत्रल नेपाना उच्चा प्राह्माचार्गा ४

त्रि

डेंग्विस्तिश्रीराम्भ्यायनमः स्वरव्ययनमः डोन त्वांस्वर्यनी देवीष्ठ द्वार्य्यक्तिमें हैं पाणिनीय वर्षेशायल दुसिद्वान की ह रीमा भाग्यक्ष ग्राम् व्यक्ष एं एक इयकार लगा तम इ ग्रामा इस म् बरद्य जनगडर्ग एक छेट्य चरते बे कपप साध्य रहत्व इतिहाहे ज्या शिर्माण्या दिसं साथा नि एषा प्रसाद ने द कारा दिसं कार पर चार्या प्र लणप्रधालितंत्रतिक हलेले उपहेणेऽ लंह लिलेपान उपहेणी याद्या चार्ण एते खर्षे पंदस्त जातर नुव र्तनी प्रस् त्रभ्यंदरीनं लोपः अप्रतिक्षा दरीनं लोपतं क्ष्यातः नामलोपः तस्य तो लोपः स्वात् पा दयोगा राष्ट्री अन्यादिरं पेनस्र ताः अंतिनाम्हित् आहिकाथानां ख्याचारां नामावण्या अधिति अध्वयिगानां स्तार्वमय दिले अन् इतार क्रा के के विश्वेद्याः अञ्च के विश्वेद्याः अञ्च के विश्वेद्या विश् महात्ताहिमदेन विधा अवैद दात्तः नाल्वाहि युराभागे युसान्य है भागे निय्य के जुरा नारा नाया नारा नारा स्थान समाहारः खरितः अवसान्दात्तलेवणिधतियमः द्वियत्तिय वितन्ति स्वान्यस्य स्वान्यस्य स्वान्यविश्वाविश्वस्य सन्तनासिका नन्नासिक लाम्पादिभा मुख्नारिकाकिनोनुनारिकाः स्वयहितनासिकयान्वायमाणवर्गीनुनासिकानन्नासि कः साम् इत्य अर्उ आयो अत्व केम छा दश्री साः त्राक्षिभद्वा दश्राताम् रिज्ञी आवात् ग्वाम पिद्वा दश्ते या द्वाम या त वन्यास्त्रप्रवित्तां नाल्योदिखानसार्यात्र अवनिक्रियेतात हुवयस्योवनकुल्वेनिस्त्राः सावाकिस्त्राः मः नवर्षाया सियः ॥

इतिष्ठवीतां नुदेशम्स्त्रभत् देशस्याणमार् रक्षमायायस्थ

State

की॰सी॰ १३ वस्तयः प्राक्तसमसंतिरये। श्राप्त श्राप्त तिस्वता नाना नावितिहत्यादिक नेतरंतः कृतयोगी तप्रजंतस्वतं समयं सार्वजीय हिं सिपवंधी कातातुनकातुनः एतरंतमव्ययं कृत्वी उदेताः विरायः श्रव्यवीभावस्त्र ग्रिधिहित श्रव्ययाहास्त्रयः श्रवयादिहितस्यायः हिं सप्प्रतिक्सीत् तत्रशालाया अध्यत्रहर्श विद्यलितो द्याविसिति द्याविस र हो। प्रमायाम्पर्गायाः एपंचेवहलंतानां युवाबा चानिक्राहिक्षा २ व्याहः श्रवगाहः पिधानं श्रपिधानं श्रेषधानं श्र निहें इतियर ह्या जित्र वितायां लयु विहानको मुद्या यहा वितायां निहें जुड़ निहें जी मित्र कि कि कि कि कि कि लाइ लाइ लाइ लाइ लाइ लाइ लाइ ला करीणी चुनावेचाकर्री के त्याः लकाराः सकत्रीकेत्यः करिण क त्रीवेचत्पाकर्री केत्या भावेक तित्र वर्त्तामोनलर वर्त्तमान त्रियाष्ट्र त्रेधीतो लीटापात ग्रहावितो उद्यादाएस मधीलाएन से भरतायो कर्ति माववातात्य चल्याति तिस्मिति किसिपप्रस्थाति द्वाति क्यों क्षायाध्य कि द्विहरू मिहरू गेतिसार्ग्य लाहे क्या स्पर् विस्तापबादः अनुहात्तिः त्यामनपहे अनुहात्ततः उपहेष्ठापोि तस्ताच्याती लिएस्याने आसनेपदंस्यात् स वित्रिमःक्षत्रिम्यायित्रियापाले खितिते।त्रिताक्ष्मधात्रामानपहेकत्त्रातिवितियापाले क्षेत्राक्षत्रियापाले क्षेत्राक्षत्र क्षेत्राक्षत्रियापाले क्षेत्राक्षत्रियापाले क्षेत्राक्षत्रियापाले क्षेत्राक्षत्रियापाले क्षेत्राक्षत्रियापाले क्षेत्राक्षत्रियापाले क्षेत्राक्षत्रियापाले क्षेत्राक्षत्रियापाले क्षेत्राक्षत्र क्षेत्राक्षत्र क्षेत्र क माहेतत्त्वाःस्युः तान्यक्वं चनद्विचनवहुबच्चनान्यकः श्रः लक्षः प्रथमाहिन्द्रानितिङ स्त्रीागत्रीणाप्रत्यक्तेक प्रचना हिनेत्रानिसः युक्तस्पवहेत्रमानाधिकरोगस्यान्यपितध्यतः तिङ्गा चिकार् कवाचिनि युक्तस्य प्रमुख्य प्रमुख्य मान्य प्रभाव द्व

श्रीराम

C-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

वा

हरेति दक्षी तुरुत न्यान्वीनद्योन्तित त्रहेनात् पर्वापः शास्त्वयवः स्तईतसन्त्र प्रानद्याः तुर्वतः तुर्वति त्वति ति त्वति त्वति त्वति ति त्वति त्वति त्वति त्वति ति त्वति ति त्वति ति त्वति ति ति ति त्वति ति ती भारी मंति पचच रूपपूर्णनी नित्यं रूपपूर्णनोग् व्यवेग्यः प्रातुरपप्यः सहित्रपनुस्यीनिद्याः पचेती द्राचित् वीयांती होयांति धनुः धनुष्ठी सोतितिही हीः नुम्बिम्द्रीनीयतिमः धन्यि धनुष्ठा धनुष्ठी गवं सह हिविगह्यः वयः पपसी प्यांति प्यसा प्रयोशी पयः सः सामुन सः सुनाति अदः विभक्तिकार्ये उत्यमित अस्नि श्रेष्ठं प्रत क्षेत्रतिलंताः नपुत्तकालिंशा व डोखगाद निवातत्ववार्य व्या श्रेतव पुना शृज्या उद्देश नीचेश रानेश रावण मति। युगपत आगत रथक स्मर विवा गत्री सांच चिवं मनाके ई बत जीके रहीं वहित अवस्तिमया निक्या स्वयं र या नक्त नम् हेती यहा इहा सामिवत ब्राह्मणवत हात्रियवत समा उपधा समत समाव तिरस ग्रंतरा विहायश ही या प्रिया मया मया मिया मिया प्रायस प्रहार प्रयाहका जापहले जानी हो मार्च मार्च नहस्र विनेष धिक ज य अयो अम आम आन मा माउ॰ आक्रातिमाणि वेच वा है अहै एवं एवं न्तं मञ्चव पुरावत स्थात कृषत किवित नत चेत चाएपत्र किचित् नह हेति निक्ष मार्कि मार्ड-नत्र यावत तावार ती है वै श्रीयर वी यर स्वाहा स्वाधा पयर त्वप्त मधाति विले किल अय तुम् स्म अहे उपत्यो विभिक्ति खाद्य निका क्र अवहतं अहंपुः अति होता अआ इई उन्हें जिस्सा विष्या निवाचि वाह प्याह श्रीता हो है हो अपे एक पहें पत तत् चा हित्याक तिराणः निहत्रका स्विविमिक्तिः यक्तासवी विमिक्तिलिखित्रमितिहित्तेतीऽख्यविमिक्ति विमिक्तिवे तिस्लिह्यः प्राकृपाम्यः ग्रस

विस्थे म्नायति आहे च इवहेश्रीणीत् उवहेश्राप् ज्ञांसस्थानागाने नतिकाति अतिव ज्ञात्वय ज्ञात्वय त्वाता त्वासति ज्ञायते आत्वायत न्त्रोवत वान्यस्थेया गाहेः युप्तास्थाहेर-यस्यविद्याक्षाहेशीकोगत्तरः बीबाईशाहेकेकितिन्तिहै उन्यान स्नायान् वस्यवनानांतिक एकारोधाः विचारपारिषदेशु अल्बारीत् इन्नेकार हुकोरिन्य हा वि भूतान्नवेषात्रहेरीलः सरंतक्षेषात्रहेरास्त्रके ति उपधारिक्षः अद्वार्गः अद्वार्गः अद्वयं अद्वार्गः अद्वा हरिकार श्रमको श्रवे श्रम श्रवे श्रमादेशः श्रम्भवश्रक स्थान स्थित स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थ कित राजिया के देश के देश के विश्व की से के ति स्थित है विस्विकार के कर्ण कि अल्या अल्या अल्या अल्या अल्या अल्या ज्यासान्यत्रासानाः अरेकामध्वस्य वस्याकारायनापावाकाः वस्याः अस्य अस्यातः अस्यः अस्य अस्य अस्य अस्य अस्य अस्य अस्य विनयों मेरे ने अण अण्ते अण्या राण्याहे की अण्यानि अण्यान अण्यान अण्यान अण्यान अण्यान अण्यान अण्यान अण्यान अण्यान नं अग्राचान अग्राचे अग्राचे अग्राचे अभ्राचे अभ्राचे अभ्राचे अभ्राचे अभ्राचन जन्म निर्म अग्राचे अभ्राचन जन्म अग्राचे अभ्राचन जन्म अग्राचे अभ्राचन जन्म गमहनजन्य स्थान के विष्युनि ए वासुप्राया नोषा जाही दि तिनन्दि जगातुः जगात्रय जगाय जगाय जगाय जगाय म ताम जिल्ला हिल्ला हुई मार्ग जिल्ला हुई मार्ग हुई मार्ग हुई मार्ग जात हुई मार्ग हुई म मिर्शिता द्वितः पर्राप्ति वहम् यान्वस्त्र तामाने देवित्त स्वाधित स

मञ्जापरस्थव नादेशह्या तुकस्थित तुकांच्या क्रिया तुकांच्या क्रिया क्रया क्रिया क्रया क्रिया क् यस ज्ञायायम् ज्ञायाया अव्यात अज्ञायायाया निह इहादे। तिन्दिहलेतस्य हुने अज्ञायात् अज्ञोक्तिव उले उलः परस्यत् स्त्रीय कता विक्रियः एका बर्गानिक अमेर्य अमेर रोनियं उपरेश्वेतीयो क्रिक्तियोन्यः नतस्य नरण्य उपरेशेत्वाः उपरेशेत्वारित्वाक्रितियानिरः वरस्यभूनरण्य ऋतोभार हाजाय महिन्द्र महें महें वह वह के वह के वह के कि वह के कि वह के कि वह के हिन्द्र के कि वह के कि वह के हिन्द्र के कि वह के कि वह के हिन्द्र के कि वह कि वह के कि वह कि वह के कि वह कि वह के कि वह कि वह के कि वह के कि वह के कि वह कि वह कि वह के कि वह कि वह के कि वह कि वह कि वह के कि वह के कि वह के कि वह कि वह कि वह के कि वह के कि वह के कि वह कि वह के कि वह के कि वह के कि वह के कि वह कि वह कि व र मार्च में निर्देश विद्विय विशेष विव ज्राम्म विधानिक विश्वितः ज्ञानंता स्थिति विवानिक व डि: पर्किष्ट्रिय अहेथित अहेथित अहेथित तथित तथित तथित तथित तथित अहेथित तथित अहेथित तथित अहेथित तथित अहेथित अहेथित त्र जुमारीत समाना अभवा अस्ति कार्य क निर्मित केमिल्ट केमिल्ट किला के किला के किला के किला के किला केमिल उत्पार युक्तमित युक्तमित्रात क्रामे वाष्ट्राध्वाक्षाक्षरित हित्राति सहस्रतिविक्षित्रधानिक क्रिया क्रिया क्रिया क्षेनोपिवादपः सुतिसंज्ञकेशक्षित्र विवादिक्षित्र विवादिक्षित् विवादिक्षित्र विवादिक्षित्र विवादिक्षित्र विवादिक्षित्र विवादिक्षित्र विवादिक्षित्र विवादिक्षित्र विवादिक्षित्र विवादिक्य विवादिक्षित्र विवादिक्षित्र विवादिक्ष विवादिक्षित्र विवादिक्य विवादिक्षित्र विवादिक्षित्र विवादिक्य विवादिक्य विवादिक्य विवादिक विता कार्य में कार्य के कार्य कार्य हैं के कार्य के कार्य के के कि कार्य कार्य कार्य के कार के कार्य के कार्य

केवहिकागंत्रेणतायः यामवत् यामवतं याववत् यामवः यामवः यामवः यामवे यामवि यामवा विधितितंत्र लिङ मलोगेनेत्यस सर्विधीयुके लि द्रीनेत्यस्मित्वापः उतिष्ठात्रे यात्रेयेषः यतः वरस्थावेधात् कावप्रस्पामध्य क्षार्याणः लोकेकोविलि भवेत भवेता रेजीत लिएः भवेतुः भवेतं लिंड किरामित केरी शिष्टि याशिविदिगमहिन किलान है निय किरामिति विभिन्न है निय क्रिया होना अवात अवात अवातः अवाः अवातं अवात अवात अवात अवात चुर अविच्याः सर्वनकार्ववादः समनित्रः सिन्नित्रः सिन्नित्रः सिन्नित्रः सिन्नित्रः सिन्नः वस्तिवहें अक् मणांबेहे एए हें प्राधिक ति स्तिवोद्धिः स्ति एसवाः सावधानुकति है । प्राधिक अस्ति अस्ति अस्ति अस्ति ग्रभ्रते ग्रभ्रवे ग्रभ्रवे ग्रभ्रवे ग्रम्म नमग्रीणे ग्रहारोनसः मभक्षनस्य मामभ्रवे मामभ्रवे शिक्षिनेतरे निर्मान व्यक्ते हेत्हेतुमद्भावादिनिद्विक्षित्रेत्रमधिक्यवैधामे लिङ् क्रियाया ग्रानिक्यात्री ग्रामिया ग्रामिक्य ग्रामिक्यमा ग्रामिक्य यान अभिवयः अभिवयतं अभिवयतं अभिवयं अभिवयां अभिवयां अभिवयां अभिवयां स्विव्यान् स्विव्यान् स्विव्यान् स्विव्यान् स्व श्वात श्वातिम श्रीतेम श्रीतेम श्रीतेष्वति श्रीतेन श्रीते श्रीति होते श्रीति होते हैं हैं श्रीति श्री क्षित श्रामक अल्पात के विद्यानको के विद्यानको के कि जान के कि जान के अल्पात श्रामको के कि जान के अल्पात श्रामक दिरोदिरेग यः यानीत् आतिष्टं तिमावस्विदिभक्तं निर्द्वाभूतिष्टिरक्षवर्षिते संविधनो डेईस् आतिष्ठः आतीः आतिष्टं अ

(8)

मुक्तयुत्तमः तथाप्रतेक्तयुत्तमः ग्रेथेप्रयानः अतिइतिज्ञाते तिङ-प्रिक्तविधिकं तिङ-प्रित्तविधानेक्त्राते कार्यः स्विधानेक्त्रिताते तिङ-प्रिक्ति तिङ-प्रित्तविधानेक्त्रिताते स्विधानेक्त्रित्ति स्विधानेक्त्रित्ति स्विधानेक्त्रित्ति स्विधानेक्त्रित्ति स्विधानेक्त्रित्ति स्विधानेक्त्रित्ति स्विधानेक्ति स्विधानेक्ति स्विधानेक्त्रितिष्टिति स्विधानेक्त्रितिष्टिति स्विधानेक्ति वः सवाप्तः एभवतिको अवतः तेअवेति त्वेअविधि युवाअवयः एवंअवय ग्रहेभवापि श्रावीभवावेः व्येभवापः श्रेवेविभावाकत्वाराव धात उपदेश अपदेशका दिखा दिया विवास विज्ञा है न स्व दिन सम्बन्धा मानुष स्व विवास विवास विवास के स्व विवास विवा योहोलिह समानग्रमनवर्गनार्थ्य निर्धामित हासाम लाखितवाह व्राह्मत्वाम स्वाहित लेखः मविम मामूनालीवः मारीव लागे विच राहें इन्येवता अविकारे अविकारः अविकारि अविकार्यः अविकार्यः अविकारित अविकारः अविकाराः लाहें प्रेयेच अविवार आधितातः स्वा विध्वाति देश किया होति अधिविद्योगे एक स्व हर्का स्व रेग किया मार्थ स्व कियुंगिर्स्तार्भ वात्वास्वादेशः अवस्त लेखेल्युः व लेखिलाहुः स्लेव्या स्थायिकार्यात्रे तातः हिनाम्बर्धाः सिः भवेषा भवेषे क्रिक्ति न नार कृष्ट्रः कृषिन अन्ति भवे भवेषा भवेष भवेष भवेष भवेष । जाई अपनिति नार अप महरादित दिनार नेत दिनारा का अधिक स्थाति है अधिक स्थाति स्याति स्थाति स्थ मिर्यानित किनातान किनातान किनातान किनातान किनातान है। विद्यान किनातान किनातान किनातान किनातान किनातान किनातान नि ग्रेंगः मह्मार विविधिणतेष्वप्रातिते विविधिणतेष्वप्रातिते विविधिता विविधिता है। ये विविधिता विविधित विष्य विविधित विषय विविधित स्थान प्रमान क्षेत्र क्षित्र क्षेत्र क्षेत

84

ब्रेत बुनास ब्रेड्ब्रह्लेनस्पचिः एकामचैत्रिक्षेत्र किविवयसीवरेष्ठ ग्रामुक्रीक्ष ग्राचित्र करेवृधावर एका करित चकार किता किरियान अमरत करेत कराव होता हाता है कि साम होता है ता है कि साम है कि स न दार्शिक अकरीत मुक्कियात एक होए एएएवि क्लिव्या प्राप्त होये तनाये ताथा तनाये ताथा तनाय का क्तिंद्रे हाः श्रमया ग्रेतेयेया भी गुते ज्ञानाः साम् विश्वययः तायायति ज्ञायादय याद्विया याद्विया याद्विया विवस्तायामाययद्विरे वासुः कासनेकाच्यानिक्रवाः लिटिकात्यास्याविधनानात्वनेत्वं यातेलावः याद्यातकावदेशपरदंततत्वानानावपद याईपानके यामः ग्रामः वास्य नेक किन्द्रानुष्यमिति क्रिक्ताक्ति क्रिक्ताक्ति क्रिक्ति केरिकारि निर्म अर्था है समित प्रत्येविहः त्रियां चिक्त हित्वस्था वालाविक हित्वनेति हित्तनेति विभविक विभविक विभविक विभविक विभविक विभविक कृतिः भाषामानुकः एका नविद्यति सामान्य अवद्यानामान्य अनुसामानुका अनुसामानुका अनुसामानुका आहेशानुकाराज्य अहते विद्यानामानुका अनुसामानुका अनु हमा नामें व्र प्रनाह में वेते हैं वेते हैं जाव लिए हिंच के विवय कि विवय प्रविच्य प्रविच्य के ते हैं विवय के ते स परिस्त नमजन्वारः मोतेषु कुण देश देश हिन् अभित्यात्रा लिया विभाविष्णाहरा संतेषु है। तिष् तुष हिन्द्र पुष्ण विष्

श्रीताम

लिए जातिय जातिय जातियाव एवमवाद्यः विधात्यो इत्त्वार्येयोगगुरः हेयोगवरेहत्तेगुरः देवेच गुर्स्यायः युगेतल्य प्रथम प्रगेतस्थल होगारेथको छलः सार्वधानुकाईधानुकार यानाहितितः स्थानवतं सिवेध असंगत सिद्धित अरंदोगान्परेषि सिद्धित सिद्धिमृतः रिद्धिमुः सिद्धिम्य सिद्धिम्यः सिद्धिम् स मातिहतियातिवातिहातिशातिवपविवहतिशाम्याति विनोतिहित्य बुच उपर्यति वा विनेतिवाति विनाति स्था हु हारियपये प्रतिकार ति कहानः त्रापार केमहर्क तेमहर्क तेमहर्क अत्वर्धाणवृद्धिः साम् जितिरिक्ति चेत्रमधे जगार जगरतः जगरः जग हत थाहती: अपद धनिप्राम प्राप्त थाए अपदि अपदिश्व प्राहित अपदिश्व प्राहित अपदिश्व प्राहित अपदिश्व प्राहित अपदिश ग्रोताहर्न्याः ह्लाहेर्नियातोवहिक्यहोतिचिवासिवहे ग्राणहोत् ग्राणहेत् ग्राणहेत्वा एएस्यानेस्ट तिनः धा मातिकार नहीं के वह माति है है जिसे हैं है जै जै ते । उपरागिर के मारिका मिसा है कि ता का का का का का का का का क स्थाते निर्वा अत्या अत्य अत्या अत्य युक्तिरिक्तिभाष्ट्रामा विकास के विकास के अन्य अन्य अने विकास है कि विकास के स्था में स्था विकास के स ननह नेहित नेहित नहिता नहिता नहित मनदित नहित नहीं नहीं मुनादीत मुनादेखते मुनादेखते दुनदिसारहै मादिनिहरूवः उप न्नह नाहव नाहव नाहक है। इहिनानुत्वधानाः नेहति ननेह नेहिना नेहिन्न नेहनु मन्नह नेहिन इहिलानु नोपान नेद्यान मुनेही त्र अवंदिकातं अवंदियाण अविति तस्मानिहिंताः हिंदिन्तात्रातिशिष्ट्याः वर्षान्त्रस्थितः यानवे ग्रानवेतः अविताः

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

नार अवान वाक्षात कावावा के विश्व के विश्व के अविद्या विश्व के विश् नार्याका बेंद्र बिहुनुः बिहुः वेस्प बिहुणुः बिहु विहु विद्व विदे विदे विदे ति उच्चिद्र ताम्प्रीन्यतास्य एम्पे लिएम्स विदेश्हें मन्य अने माना राक्षिनामुक्तः विश्व नेविह वेदिना वेदिकाति विशेक्कितिन्यतार्का विनेन्तिरपान मुक्तानारान्यक्रमारंतर वित्वविकार्यकार्विकार्विक विविध्वति । विविध्वति । विविध्वति । विदेशिति अत्र आविधार्वे उपर्यातस्य जात विधानक कि विदेश के नाम विदेश के तो विदेश के विदेश के विदेश के विदेश कर विदेश कर विदेश कि वि विदेश कि व वित्रं वित्र वेटा ने वेटाव वेटाम अवेत अविता अविदः एक धानोदिलाव हे मसिलिक की अवेः अवेच विद्याने विद्याने विद्यान विद्येन अवेदियात अक्षति अक्षि उपक्षि जाई भीतिका कार्यः उपक्षिणः जाई अञ्चयरस्थातेः कृष्ययः वकारे चिया नियान पारः याच

ग्रधात भारत धरेत धरेत ध्रिकात ध्राकेख ग्रधावीत ग्राधत ग्राधतिकात ग्राधिकात एकि ज्ञायने नयति नयते ग्रामित अनेस इयचस को वचित वचते ववाचे वेचित्र ववना वेचे वक्का बल्पति वचते वचता अवचन वचन वचन वचन वचार वती व अपाको अपार अवन ग्रपत्यत ग्रपत्यत ग्रपत्यांना अज्ञतिकाणे अज्ञति अज्ञते अज्ञतः त्रेजः त्रेजिय व्यक्त त्रेज्यः त्रेजाः वयाज येति व्यक्तिम सेज सक्ता सत्यांने मस्ते ग्रामादीत ग्रामसः ग्रामक ग्रामदाणा ग्रामस्पत पत्रहेवप्रक्षात्रंग तिकरणहाने व ग्रामित पत्राति व ग्रामेना व ग्रामेना प्राप्ति व ग्रामेना प्राप हो ना चाभाग ए एं इसार के लिए के विस्विव का है ने कि विस्विव का है ने विस्विव के का न्रम्पिति न्याने वसी श्रेष्टि श्रेष्ट्रिनेव इसिन् इसिन् श्रेष्ट्रिनेव इसिन् वस्ति व वःपायास्त्राचेर्धः श्वाच्चरधातेः होहेलापः सद्विहातिस्वरित्व हेलापे हेलापे उद्योह बस्पति श्रवाहीत श्रविहा श्रविह अवेह मुकरे महत्व मुकरा अवेह अवताना अवदाव अवेहाः भवताचा मुके स्वाह सवत सवताहः है इति विदेश हैं। विक् गिडिक्राधिकः भवः जेक्यार् गीर्ध गीर्धः गोर्धाः गोर्धः गोर्धः गोर्धः गोर्धः गोर्धः गिरान्तार्का गोर्धि गोर्धः गिरा म गमरनिक्षणानीयः शस्त्रविक्षणानीनान् इत्त कृष्णिमणास्यवः जन्तः अस्ति आहे आहेतः यज्ञानिक्षणान न्य हेन्द्र मह सर्वात माहत माने महिन माने माहत माने माने माने माह महिमाने महाम महिन माने महिन माने महिन माने म

द्रवाष्ट्रावन्न एम्पोरिन्याम्बास्पासामिष्ट्याविपकायिन जुरुवं नकार जुरुव होता सेष्ट्राति जुरोतु बहुतात बहुता बहुत बहुति बहुतानि अजहोत अबहुता अबहुता अक्रिच धांताहुता आधार सारो नुपर गत्रहें गुरवात हमत ग्रहोकीत ग्रहोकित जिसीसके विमित्त सिका-गत्राका उःसाइनारोडिः निसार्वधारके विभोतः विभित्तः विभवति विभवति विभवति विभवति विभन्त विभिन्त विभिन्त विभिन्त विभिन्त विभिन्त गुविभेत विभियात भौयात् ग्रेभेक्षात् ग्रुभेक्षात् ही बजाका दिहेते तिहीतः विदेशत दिएका र जिहाण हेना हेव्यति जिहेनु ग्राजिहत जिहेग्यात होयात ग्रहेशात ग्रहेशात ग्रहेशात श्रहेशात श्रहेशात ग्रहेशात ग्रहेशात ग्रानिषयमाञ्च ग्रम्मसस्यरः खीर्षयात्रे वहें क्रक्षक्रीण ग्रह्मावयं क्रियक्रिय मनदेतस्य रूपरः देनि चा रेफ मान्यधार्मे रूपभाषा इकी देशित होने प्रवास कर के प्राप्त के किलानित वेन अंग्रेमस्ट्रेताचेरेहोचीवास्य जन्ने सिंह पविता यक्षेता यदिस्यति परीस्थावि यदेश्यावि य क्रीनुसंवेषः ग्राणिए के ग्राणियः विवसीत एक्रीत ग्राणित क्रिनिकेसः वरसेपदेषु ग्रात रंगम् नहीर्धः ग्रणविद्यात् ग्रपविद्यात् ग्रपविद्यात् उत्हाक्तात् जहात् जहात् इद्वा सामाने विकास के सितः इत्यो प्राम्यस्यामार्गिति सार्वधात् के विकास के स्वार्थित स्व

उपभाष 尼亚山

मधात र को वर्ता वा नाए लाह्यः वंचवाय द्ववाया द्ववाया होट्याः ग्रांत ग्राहतः श्वाहः ग्राहत्यः द्ववित्त ग्राह्यः ग्राहत्यः द्ववित्त ग्राह्यः ग्राहत्यः द्ववित्त ग्राह्यः ग्राह्यः द्ववित्त ग्राह्यः ग्राह्यः ग्राह्यः व्यव्यायः द्ववित्त ग्राह्यः ग्राहः ग्राह्यः ग्राहः त अर अवो वता अवस्थत अवस्थत चिक्रितेच चिक्रितेच चिक्रितेच स्वित्तेतियह रातितह हासेवाण अण्य आकारने वः प्रोगित श्रीति का विदर्शना हो विदिश्चा विद्या वि ते उत्री वते उत्रीति एक्नातिवा के नद्धाः हैकाणस्याः ज्ञानःवताः हैकाणस्यानस्य हिनेअवंति नुम स्ट साहित्वं अफ्नाव अफ्नावाः अफ्नावः । विभावाणिः इत्राहिप्रत्वविष्ठित्वात् अफ्नाविष र हालेक र किन्युंक अधिनुकिर अधिकिता अध क्रिमानि उत्ति मुक्तिया अक्रिताक्रिय है स्टार्मिता क्रिमान है अक्रित से क्रिमान अक्र वात् उपिकात् उपिकात्व अपिकियो अपिकिया अपितियोग अपितियोग उराहीपरतियय स्थानिया । गुणः जेलेबीत् जेलेबिय केलिबिया जेलिबियात हे इत्याहाहि इसी गहनेयाः जुतालाहित्यः क्युः मणः क्युः स्वात क्येपाती हैताः अहैति क्रीहतः अहैन्स्यति क्रियंस्यति क्रियंस्य विविध्य

ते एक्त आकारने स्ताणित क्रिणीतात स्तारत स्तरतः तस्तरे स्तारिता स्तरीता स्तरीधात स्तर्णतं स्तार्थात स्तर्थात स्वर्धात स्तर्थात स्तर्य स्तर्थात स्तर्य स्तर्थात स्तर्थात स्तर्थात स्तर्थात स्तर्य स्तर्थात स्तर्था स्तर्य स् लात्या अल्लाव व्याप प्रविध स्वरीय स्वरीय से के के के के के कि से कि से कि से के कि से कि से कि से के कि से यः प्रानमारे प्रोही गराण गर्मात गरीका दंगतितन वहिः श्रेष्य होत श्रेष्य श्रेष्य श्रेष्य श्रेष्य होता के वर्षण अप्रक्षेत्र अध्यति आण्य अप्रिता अप्रिव्यति अध्यति अण्यति अण्यति अप्रक्षिति मोधिता सुधारा द्वा अववाधने जानाति । मंत्री बर्संभक्ती वर्तित बंबे बब्धि विस्ता वरीता अविद्यं ग्रावरी ए ग्रावत इतिनवारिः चुरक्तिये शतायध्यप्रक्रयवीपाम्स द्रोक्तिना त्यान्य चेवमिवर्ण चर्ण चुराहिम्यारित्व एभ्यारित्वस्थात्यां ये गंतातिगुरणः सनान्यता इतिभावतंत्रित्याता वाहिगुरणायाहेग्ये चार यति रिप चश्र ग्रिजंगासाम्नेप्रकारमामिनिकियाप्ते चेद्रस्यते चार्यामास चेत्रियत चार्यामास चार्यामास चार्यामास चार्यामास स्लाहि:क्रेषः देखीलद्वारित्यम्बार्खदीपैः ग्रम्मुर्त कष्णमका प्रवेधे ग्रह्मीयः भ्रमः पराक्षेन्यविधी परानिविद्यामार्थ श्रपीयवृत् यह ज्ञामामवत् ग्राःस्यानिवस्पानस्यानिभनाद्यः यवीत्वनदृष्ट्याविकावर्त्तवा इतिस्यानिच वाची पश्ची विदेः क्षण्यति श्वानापितादीर्घस-वन् वीन अच्छात् गण्याचे गण्यति ईचगणः गण्यते स्थार्थः ईत्याचारचर् प्रेमाणं अतागण्ते अतागण्ते र इतिचुराहिः के के ज्ञानिका विद्यामानाति स्थापाविव्हिता इष्टः कर्त्तीस्थात् न स्थानकहित स्व कर्तिः स्थानकहित स्व श्रक्षेयवत श्रुरी रवत् ग्रासीलव र श्रजीजवत रण पुराह स्टामित प्रयोगित वापिर प्रति वाची धाराणि च भवंत प्रयात भावपात ज्ञान पर स्विपरेपर्गत स्वप्य संचान हेत्सात प्रयोगित वापिर प्रविधि प्रति प्रयोगित स्वापित स्वापित स्वापित स्वप्रति स्वाप्य स्वा

हिक्काणांवा अधिकित्रिणाधाताविधिणेक कर्ताकातान्वेकाणाम् पर व्यक्तियावाचि ५२ सन्पर्देशः सनंतस्वपंदे तस्वचप्रमस्येकाचे

ता निष्ठतिति उपधापाक्रत् परिणो अति छियत घर चेखां घराद्यातितः स्यप्तिच तितंहरूः घराहाना स्पार्थित उपभाषाहरकः धनपति जपजाने क्रायनचे बरायपति ग्रातिक्रपत् श्रातिष्ठात इतिरूपत् मानिक्षाताः सामान्यस्कार

एत खत्र कर बत बत ध्रा प्रताप द्वा के स्टिक्ट के कि के कि कि एक कर के कि के कि के कि कि कि कि कि

गंगरीं अतो ग्रामहैने श्रात्रलोधः अनिहाब अतिधावभन्न अका अनायालमा खंबसारोधः अनिह से साता मेह्यति ग्राप्तन्ति तिरं धी ही त्री चंद्र इंधात ईधते इंति इद्धा चिने इंधिना इंद्धा इंधानी इंधानी इन्हें ऐंद्र ऐंधानी एंधन विद्यावणे विने वेता इतिरधादिः तनादिक्रकण्युः श्रेपाणवादः तनु विस्तारे तनाति तनुते ततान तेने तनिता तनुयात तन्या तन्यात् तिविधि श्रानीत ग्रानीत् तनाहिभाराणारीः तनाहेः प्रिचावान्यम् तथाराः ग्रानेव ग्रानिय ग्रानेवाः ग्रानेवाः ग्रानेवाः ग्रानिष्यम दुक्ज करणे कराति ग्रानिसाविधानुके कुर्ताः नभकुर्कुरी भरपकुर्कुरीर्यधाषानक्षिः कुर्वति नित्यकरोतेः प्रतियोकारस्पतित्येक्षाचारवाः कुर्वः वुर्मः कुरूतेचकार चक्कि चक्कि चक्कि चक्कि कता करिस्पति करिस्पति करोतु वुरू तं श्रव्यानायवानायाः प्रणः पुनः पुनः त्यात् विक्रिय चिक्रिय चिक्रिय चक्रिय चक्रिय व्यव्यात् स्वार्वित स्वार्व स्वार्वित स्वार्व स्वार्वित स्वार्व स्वार

जानुराते। घरेजीति धनुनामिका साधः १०

करेरिति वाल्यक्यानावयोगेष्ठकाः गंध नंहिषा उन्हारी साच्यातीतः विश्वासी वाल्यक्यानावति काष्र्य क्रिते अन्ध्येत द्रया हित्स क्रिति वाल्यक्यानावया याल्यक्यानावया याल्यक्यान्यक्याच्यक्याच्यक्याच्यक्याच्यक्याच्यक्याच्यक्याच्यक्याच्यक्याच्यक्यक्य यान्य विद्यार्थः प्रार्थित ने मुन्न हिला वर्ति ए ए मिल्य के मिल्य ववहत्वयाः पर्दापान्य अवार्ति । अति गूनवनेकि महीभुनिति इत्यात्मनेवहप्रिया गूनुप्राभ्यां हान् वितिष्ठाने गंधुनाही चपरसे पहुंचान श्राया याज याज होति श्री श्राया तियः हिण श्रेयण स्विति ते श्रीहिण्ति श्राहरः श्राहरः प्रवहित ग्रेकियः विदेशस्याति स्वार प्रतिश्वात मयतिति मः रक्षुकाराया विरम्नि उपान्त यसहत्रम्य समयितस्य ग्रंत भीवितस्य विषय विषय विषयः भाववर्मगाः न्यस्य साने परे सार्वधानुके पर् 可更 भावकर्भवाचितिधातार्थेक सर्वधातक भावः क्रिकामा चभावाधिक लकारे पण नः स्तृति तच्छा हर सार्थ्या सामानाधिक र एवा भावन्य प्राप्त स्वाधात्र तिहा हक ज्रो नाज्यात्रयाम् ग्रह्मार्वनिहत्वाम् वनीतेनीद्विन्तनादिवित्वेवविन त्रेकेक्ष्रितः त्यात्रयान्येक्षर्यते वस्वै वस्व परेशे क्रियार हु क्रोबा विपवादिर के उपदेशियो व तहं ता नाह नही ना विपि बांग का विष्या त्या दिख्या विपा का ना ना विपा का ना विपा का ना विपा का ना विपा का ना वावक जनमा आबयतेयातर चिएवर् भागाहे हिः भाविता भविता भवित्यते भवित्यते भविता भवित्यते भवित्यते भवित्यते भवित्यति भवित्यति । विते ग्रह्मनुक्ष्यते ग्रन्वभाविद्यता ग्रन्वभविद्यता विल्लावः भाव्यते भावयांचेत्र भावयामाते भावविता चिएवदिरः ग्रामीयनेनाति हता किलोयः आविवा आविकाते आविकाते आविकाते आवितां ग्रामायात अलोत आविकाय आविकास ग्रामाविकातां ग्रामाविकातां व्रभूवाते वृभूवा चके बुस्राधता युस्राधवाते बुस्याते खुक्त्र रहती अक्तराविधा वक्ष्मी ही है। स्ट्यते विखः त स्वे स्वाविगारें। तासाविधाते साधाते असाविश ग्रांशिक्षाता ग्रीताकाता असाती मुप्पानी तिराणः ग्रावित सातारणे कार्यते सातार गरे एयर एगत् विएवदिर ग्राविता ग्री सात्ति भ्र न्नापः स्टब्बे इहिनल नेप्रते बंध्यारणं इत्यते तन्नेनेथिकि आहेता हेक्रानातायते तन्यते नयो नतायच तपक्रिकाए नयान्तर्भक्तियेन्तायेन यांचत चयावेन चयाच्या तीतं के तिवाति कति चराधिवारा का रोश्येक्षा यहाये यहाये यहाये यहाये यहिया संस्थेत अंते अंते अते अते अते अते विशेष न लोगे व ग्रमाति ग्रमंति लागते विभाषा चिक्कामलोः लर्भन्ति ग्रलंभि ग्रलंभि वर्शकर्मेष करीतेन विवासितं नरासकं मेकाएए नाप ग्रक्मिकावान्त्र

िर्भावेचलः क्रमेवत्वमणातुल क्रियः वामेख्याकिययातुल्यक्रियः क्रजीक्षिवत्यात् कार्याविहेक्रोवंतेचयगान्त्रचे परंचिए। विएविहरू:स्पःपचातेषे लं भिराने कार्छ ग्रापाचि अमेरि भावे भिराने कार्छन इभावकर्ममात्रिया ग्राभिज्ञाव चनेन्द्र स्थाने वैधिनुप्रवर्षे भ्रान यानेधातान्दिर्लह्यापवरः वसनि वारे सरक्षिर छा ते कुलेब त्यामः एवं बुधारे चेत्र वि द्यादि चयोतिय नयरि पद्याते वेत्र में मूलिता नासि के छाय हुने अं मादि सरक्षेत्र कि होप बार्: यतात सम्प्रिधिशः वर्त्तमानमामाध्यवर्त्तमानव हा वर्त्रमानेपे प्रत्यावरक्ता लेवर्त्तमानस्त्रीये अते भविद्यान चवास्यः तस् आगताति अप मागह्यामि ग्रागमें वाक्षामि व्यवस्थामि वामिन्यामिन हेत्हेतु सती। सिंहः कात्वाम कृते ने में ने में विकास कराने स धालाः च्या रतीयाध्यायां ते वे व्यव्यक्तिधाताः प्रतेष्युः हास्तिष्ठिः तिहाले सन्धारको क्रास्त्रिण च्यासिन्धारके धिकारः सन्धारको स्वास्त कः स्त्राधिकारोत्तिविना त्यात्याः एषुन्तः चावित्यतः प्राक्षः त्याते का क्षेत्रकान्त्र तत्यात्रे तत्यात्रे विकाश्च तत्यात्रे तत्यात्रे तत्यात्रे विकाश्च तत्यात्रे तत्यात्रे विकाश्च त्यात्रे विकाश्च त्यात्य त्यात्रे विकाश्च त्यात्रे विकाश्य त्यात्रे विकाश्य त्यात्रे विकाश्च त्यात्रे विकाश्च त्यात्रे भारतिहार एधितवा एधनीपं त्यया आवे हीत्स्पीक्षित्रके क्वेच क्वेच के तथा ऋषनी प्रोबाधित्र सूच्या के लिस र उपसे स्वानं प्रकेशिका आवाः यक्तव्या इत्य थीः भिदानिमाः क्षमिण्यत्ययः क्षम्यन्युरोबीहर्ने क्षाचितिश्वतीः क्षीचिरश्वति कृष्विहिर्माद्या क्षीचिर्न्यहेवविधे विधानं बहुधारमी ह्यच तिधिरास सर् सः भन्नयः संबद्धिस्तात्वनेनस्तानीयं सूर्णिहीयतेसिंगनीयोविषः स्वनीयत् नेवंत्रये ईस्त्रति स्नातः मुणःहेयं देवं योरहुपधात् पर्वातारह्यः होत् एवते व्यापारः प्राप्यक्ति एतिस्तु प्रम्य है रहेयः कीप् इस्त्रस्थितिक्ति हैते हताः स्वापा अवापा इत्याहित्स्ताहीकितिष्ठायः वृत्यः ग्राहेताः मुखाः महोतिमाया मनेः कात्वा एताः सहेतात्वते सवणाताह्नेतान्वणं सहेत